>

Title: Need to set up a separate Bank for Railway employees.

**श्री सोनवणे प्रताप नारायणराव (धुले):** भारत वर्ष के विकास कार्यों में भारतीय रेल का बड़ा योगदान रहा है। करीब 14 लाख कर्मचारी/अधिकारी भारतीय रेल को चलाते हैं। रेल कर्मचारी रेल से सफर करने वाले हर यात्री को भारत की दुर्गम क्षेत्रों से लेकर मेट्रो सिटी तक वक्त पर पहुंचाने के लिए बहुत प्रयास करते रहते हैं। इस काम में भारतीय रेल के कर्मचारी/अधिकारी बड़े कष्ट उठाते हुए ड्यूटी कर रहे हैं। इन लोगों की माहवार सैलरी हर महीने अलग-अलग बैंकों में जमा होती है। इसकी रकम करीबन 4000 करोड़ रूपया प्रतिमाह बनती है। इसको देखते हुए भारतीय रेल का अपना निजी बैंक होना जरूरी है। यह मालूम होता है और यह रेल के कर्मचारी/अधिकारियों की मांग है। भारत सरकार ने अपने पिछले बजट में महिलाओं के लिए विशेष बैंक निर्माण करने की घोषणा की है और इस प्रकार की बैंक शाखाएं देश के कुछ राज्यों में शुरू कर दी गई है। समाज के अनेक घटकों को स्वाबलंबी बनाना यह सरकार का कर्तव्य है। इसको देखते हुए रेल कर्मचारी/अधिकारियों के मन में सवाल पैदा होता है कि रेल कर्मचारी/अधिकारी के लिए अलग बैंक क्यों नहीं बनाई जा रही है।

रेल कर्मचारी भारतीय रेल का एक निजी घटक है। वे अपने कार्य में व्यग्र रहते हैं और वे अपनी फैमिली के लिए बहुत ज्यादा समय नहीं दे सकते। उनको अपने बच्चों को पढ़ाना, घर के लिए हाऊस होल्ड अप्लायंसेस खरीदना, मकन बनाने के लिए कर्जा उठाना आदि काम करने के लिए उनको विभिन्न बैंकों में चक्कर काटने पड़ते हैं। पूरे भारत वर्ष में भारतीय रेल का अलग नेटवर्क होने से बैंक के निर्माण से उनकी तकलीफें दूर हो सकती है। उनकी सैलरी उसी बैंक में जमा होने के कारण उनका अपना काम जल्दी निपट सकता है। अलग बैंक से कर्जा लेने से उसका इंटरेस्ट एमाउंट, प्रोसेसिंग फीस आदि बैंक में जमा होता है। भारतीय रेल बैंक बनने के बाद यह सारा पैसा भारतीय रेल के निजी बैंक को मिलेगा, जिसकी वजह से यह बैंक हमेशा फायदे में रहेगी और रेल कर्मचारी के लिए फायदेमंद साबित होगी।

लोक प्रतिनिधि होते हुए मैं रेलमंत्री जी को विनती करूंगा कि भारतीय रेल कर्मियों के लिए स्वतंत्र बैंक खोलने पर गंभीरता से विचार करे जो रेल कर्मचारी के लिए फायदेमंद साबित होगी और जिससे भारतीय रेल का भी रेवेन्यू बढ़ेगा।